श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 7, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज बुधवार 12 अगस्त, 2020

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

बेटियों का पैतृक सम्पत्ति पर अधिकार होगा : सुप्रीम कोर्ट

बेटियों के पैतृक संपत्ति पर अधिकार मामले में सुप्रीम कोर्ट का अहम फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि 9 सितंबर 2005 संशोधन के बाद बेटी का भी संपत्ति पर हिस्सा होगा, भले ही संशोधन के समय पिता जीवित था या नहीं

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़े फैसले में कहा है कि बेटियों को पैतृक संपत्ति पर अधिकार होगा, भले ही हिंदू उत्तराधिकार संशोधन) अधिनियम, 2005 के लागू होने से पहले पिता की मृत्यु हो गई हो. हिंदू अविभाजित परिवार की संपत्तियों में बेटियों के अधिकारों पर सुप्रीम कोर्ट ने बेटियों के पक्ष में फैसला सुनाया है. जस्टिस अरुण मिश्रा ने कहा, एक बार एक बेटी हमेशा एक बेटी .. बेटा तब तक बेटा होता है जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती.₹ उन?होंने कहा कि बेटियों को भी बेटे की तरह संपत्ति के बंटवारे में बराबर हिस्सा दिया जाना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि 9 सितंबर 2005 संशोधन के बाद बेटी का भी संपत्ति पर हिस्सा होगा, भले ही संशोधन के समय पिता जीवित था या नहीं. जस्टिस मिश्रा की पीठ ने कानून तय करते हुए कहा, एक बेटी जीवन भर के लिए होती है.एक बार बेटी, हमेशा के लिए बेटी दरअसल क्या हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम, 2005, जिसने पैतृक संपत्ति में बेटियों को समान अधिकार दिया है, का पूर्वव्यापी प्रभाव होगा, इस पर कोर्ट को फैसला सुनाना था.

जस्टिस अरुण मिश्रा की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की 3-जजों की बेंच ने ये कानून तय किया.दिल्ली हाईकोर्ट ने हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की धारा 6 की व्याख्या के संबंध में विचार-विमर्श किया था और 2005 के हिंदू उत्तराधिकार (संशोधन) अधिनियम द्वारा संशोधन मामले में सुप्रीम कोर्ट के दो विपरीत फैसलों का मुद्दा उठाया था. इसके बाद मामले को सुप्रीम कोर्ट के तीन जजों के पास भेजा गया।

सुशांत सिंह राजपूत केस: सुप्रीम कोर्ट ने रिया चक्रवर्ती की याचिका पर सुरक्षित रखा फैसला

पीटीआई,नई दिल्ली। बिहार सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से कहा कि मुंबई में सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या मामले में पटना में दर्ज एफआईआर कानूनी और वैध है। साथ ही आरोप लगाया कि महाराष्ट्र पुलिस ने इस मामले की जांच में सहयोग नहीं किया। यहां तक की बिहार पुलिस को पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट तक नहीं दी गई। ऋषिकेश राय की एकल पीठ को बिहार सरकार की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील महिंदर सिंह ने कहा कि राजपूत केस में मुंबई में अभी तक एफआईआर दर्ज नहीं की गई है। उन्होंने अभिनेत्री रिया चक्रवर्ती द्वारा लगाए गए राजनीतिक दबाव, पूर्वाग्रह और प्रभाव के आरोपों का खंडन किया। सिंह ने रिया के इस आरोप का भी खंडन किया कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के इशारे पर ही पटना में उसके खिलाफ राजपूत को आत्महत्या के लिए मजबूर करने के आरोप में अभिनेता के पिता ने प्राथमिकी दर्ज कराई है। न्यायमूर्ति रॉय की पीठ रिया चक्रवर्ती की उस याचिका पर सुनवाई कर रही है जिसमें उसने पटना के राजीव नगर थाने में दर्ज कराई गई प्राथमिकी मुंबई स्थानांतरित करने का अनुरोध किया है। रिया चक्रवती की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम दीवान ने न्यायालय में दलील दी कि दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत के पिता द्वारा अपने बेटे की आत्महत्या के सिलसिले में अभिनेत्री के खिलाफ दर्ज कराई गई प्राथमिकी का पटना में किसी अपराध से कोई संबंध नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि इस मामले में राज्य का बहुत ज्यादा दखल और असर है। इसलिए इसमें दुराग्रह की आशंका है।

उन्होंने इस मामले में सिलसिलेवार घटनाक्रम का जिक्र किया और कहा कि पटना में प्राथमिकी दर्ज कराने में 38 दिन से भी ज्यादा का विलंब हुआ है। उन्होंने पटना में राजपूत के पिता द्वारा दर्ज करायी गयी प्राथमिकी का जिक्र किया और कहा कि शिकायत मे लगाए गए सारे आरोपों का संबंध मुंबई से है। दीवान ने कहा कि मुंबई पुलिस ने अब तक इस मामले में 58 व्यक्तियों के बयान दर्ज किये हैं और इस मामले की जांच में काफी प्रगति हुई है। दीवान ने कहा कि इस समय सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले का समानांतर मीडिया ट्रायल भी हो रहा है।

महाराष्ट्र सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने पीठ से कहा कि वह इस मामले की जांच में बिहार के अधिकार क्षेत्र का विरोध कर रहे हैं। पीठ ने दीवान से कहा कि रिया चक्रवर्ती ने अपनी याचिका में इस मामले की सीबीआई जांच कराने का अनुरोध किया है। पीठ ने कहा, "यह एक अन्य पहलू है कि सीबीआई इसमें कैसे आयेगी। दीवान ने कहा कि वह इस मामले की किसी निष्पक्ष जांच एजेन्सी से निष्पक्ष जांच चाहते हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले को लेकर कई अन्य मुद्दे भी हैं जैसे बिहार ने कैसे सीबीआई जांच की सिफारिश कर दी और कैसे इसके बाद आदेश जारी किये गये। दीवान ने कहा, "मैं (रिया) अपने उस कथन पर टिकी हूं जो मैंने अपनी याचिका और अतिरिक्त हलफनामे में कहे हैं। न्यायालय ने पांच अगस्त को रिया की याचिका पर सुनवाई के दौरान टिप्पणी की थी कि अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत एक प्रतिभाशाली होनहार कलाकार थे और उनकी मृत्यु के कारणों की सच्चाई सामने आनी ही चाहिए। न्यायालय ने अपने आदेश में कहा था, "एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना हुयी जिसमे एक प्रतिभाशाली कलाकार का निधन ऐसी परिस्थितियों में हो गया जो अस्वाभाविक हैं। अब उन परिस्थितियों की जांच की आवश्यकता है जिनमे यह मौत हुयी। केन्द्र ने भी न्यायालय को सूचित किया था कि "प्राधिकारियों ने सिद्धांत रूप में इस मामले की सीबीआई जांच कराने का बिहार पुलिस का अनुरोध स्वीकार करने का निर्णय लिया है। शीर्ष अदालत ने सारे तथ्यों पर विचार के बाद इस मामले में संबंधित पक्षों- राजपूत के पिता कृष्ण किशोर सिंह, बिहार सरकार एवं महाराष्ट्र सरकार को रिया चक्रवर्ती की यचिका पर तीन दिन में अपना अपना दृष्टिकोण रिकार्ड पर लाने का निर्देश दिया था। इसके अलावा, मुंबई पुलिस को इस मामले में अब तक की जांच की प्रगति से न्यायालय को अवगत कराने का भी निर्देश दिया गया था। बालीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत (34) मुंबई के उपनगर बांद्रा में अपने मकान में 14 जून को मृत पाये गये थे।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा, भाजपा सरकार को नहीं है कन्नौज के विकास की चिंता

लखनऊ, जेएनएन। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा यह मानकर चल रही है कि कन्नौज उनका घर नहीं है। वे वहां के राजनीतिक किरायेदार हैं जिन्हें किराया भी नहीं देना है। भाजपा सरकार को कन्नौज के विकास की चिंता नहीं है। बस समाजवादी सरकार के समय शुरू हुए कामों में रोड़े अटकाना और समाजवादी पार्टी के नेतृत्व पर अनर्गल आरोप मढ़ना ही उन्हें आता है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने मंगलवार को जारी बयान में कहा कि कन्नौज की ऐतिहासिक नगरी अपने इत्र के लिए मशहूर है। समाजवादी आंदोलन के प्रखर महानायक डॉ. राममनोहर लोहिया की यह कर्मस्थली रही है। वे यहां से लोकसभा सदस्य रहे हैं। सपा सरकार में 2016 में कन्नौज में मेडिकल कॉलेज का उद्घाटन हुआ था। करोड़ों रुपये की लागत से जिला अस्पताल में ट्रॉमा सेंटर चार साल पहले बनकर तैयार हुआ। भाजपा सरकार ने इसे शुरू नहीं कराया बल्कि यहां पुलिस चौकी बनवा दी। आज कोरोना संकट काल में इलाज का यह केंद्र बनता पर भाजपा को तो समाजवादी सरकार के कामों को उजाड़ना है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यह बात तो सभी को पता है कि समाजवादी पार्टी कभी भी जातिवादी नहीं रही है। सभी वर्गों का सम्मान समाजवादी पार्टी में रहा है। इसके विपरीत भाजपा नफरत और बंटवारे की राजनीति करती रही है। विपक्ष के प्रति उसका रवैया बदले की भावना का होता है।

स्वतंत्रता दिवस पर 244 कैदियों को रिहा करेगी म0प्र0 सरकार: नरोत्तम मिश्रा

भोपाल, पीटीआइ। मध्य प्रदेश गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने मंगलवार को कहा कि सरकार ने स्वतंत्रता दिवस पर राज्य के विभिन्न जेलों से 244 कैदियों को रिहा करने का फैसला किया है, । एक अधिकारी ने कहा कि सरकार हर साल 15 अगस्त को अपने अच्छे आचरण और अन्य मापदंडों को ध्यान में रखते हुए कैदियों को रिहा करती है। मिश्रा ने संवाददाताओं से कहा कि 244 कैदी विभिन्न जेलों से रिहा किए जाएंगे। इस बीच, बड़वानी जिले में पुलिस कर्मियों द्वारा दो सिखों पर हमले की पृष्ठभूमि के खिलाफ, गृह मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार सभी नागरिकों के सम्मान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

उन्होंने कहा कि सिख समुदाय के एक प्रतिनिधिमंडल ने पहले ही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को इस मामले में त्वरित कार्रवाई करने (दो पुलिस कर्मियों को निलंबित करके) के लिए धन्यवाद दिया। हमले का एक वीडियो वायरल हो गया था। शिरोमणि अकाली दल (रअऊ) के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल और केंद्रीय मंत्री हरसिमरत कौर बादल ने इस घटना की निंदा की थी।

सिर्फ मध्य प्रदेश सरकार ही नहीं बल्कि, दैहरादून में भी स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कैदियों को रिहा किया जाएगा। जिला जेल प्रशासन ने कैदियों की सूची शासन को भेज भी दी है। इनमें 60 से अधिक कैदियों के नाम शासन को भेजे गए हैं। हालांकि, इस पर अंतिम फैसला सचिव गृह और कारागार नितेश झा की द्वारा किया जाएगा। उधर दूसरी तरफ तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने भी आदेश दिया है कि जिन कैदियों का आचरण अच्छा है उन्हें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर रिहा कर दिया जाए। इस सिलसिले में उन्होंने विभाग को सूची तैयार करने के लिए आदेश दे दिया है।

नही रहे राहत इंदौरी, हार्ट अटैक से निधन

'मैं मर जाऊं, तो मेरी एक अलग पहचान लिख देना, लहू से मेरी पेशानी पे हिन्दुस्तान लिख देना'

नई दिल्ली, जेएनएन। 'रहने को सदा दुनिया मे आता नही कोई...आप जैसे गए वैसे भी जाता नही कोई' जैसी अनगिनत दमदार शायरियों से समां बांध देने वाले मशहूर और लोकप्रिय शायर राहत इंदौरी अब हमारे बीच नहीं रहे। कार्डियक अरेस्ट की वजह से राहत इंदौरी ने आज इस दुनिया को अलविदा कह दिया। हाल ही में राहत का कोविड 19 टेस्ट पॉजिटिव आया था जिसके बाद उन्हें अरबिंदो हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया। राहत साहब ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल पर ट्वीट के जरिए फैंस को इस बारे में जानकारी थी कि वो कोरोना पॉजिटिव हैं। वहीं उनके निधन की जानकारी भी उनके आधिकारि ट्विटर हैंडल पर ट्वीट के जरिए ही दी गई है।

राहत इंदौरी का कोविड 19 टेस्ट पॉजीटिव आने के बाद हर कोई उनके लिए दुआ मांग रहा था, लेकिन राहत इंदौरी ने आज इस दुनिया से हमेशा के लिए रुखसत हो गए। राहत इंदौरी कितने बड़े और मशहूर शायर थे ये बात सभी जानते हैं। हर उम्र का शख़्स उनकी शायरी का दीवाना था। क्या मोहब्बत हो, क्या बगावत, हो क्या देशभक्ति हो, क्या नफरत हो... राहत साहब हर तरह की शायरी करने में माहिर थे। उनकी शायरी करने का अंदाज इतना अलग था कि वो अपने अंदाज से ही महफिल में जान डाल देते थे। राहत साहब का जाना शायरी की दुनिया में तो एक झटका है ही, साथ ही शायरी के शौकीन उनके फैंस के लिए भी ये एक सदमे जैसा है। सोशल मीडिया पर ट्वीट कर लोग उन्हें श्रद्धांजलि दे रहे हैं और उनके फेमस शेयर ट्विटर पर शेयर कर रहे हैं।

कोरोना से बचने और इम्युनिटी बढ़ाने के लिए कैदी ले रहे ऑनलाइन योगा क्लास

कोयंबटूर, एएनआइ। तमिलनाडु के सेंट्रल जेलों में कैदी कोरोना के संक्रमण से बचने के लिए और अपनी इम्युनिटी बढ़ाने के लिए योग की ऑनलाइन क्लासेज ले रहे हैं। ईशा योगा नाम का एक समूह इनके लिए इस ऑनलाइन क्लास का आयोजन कर रहा है ताकि कैदी खुद को स्वस्थ रख सकें और कोरोना के प्रकोप से खुद को बचाए रखें। तमिलनाडु जेल विभाग के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए, ईशा योग केंद्र 28 जुलाई से राज्य की लगभग सभी केंद्रीय जेलों में कैदियों के लिए वर्चुएल क्लासेज आयोजित कर रहा है। ईशा के योग शिक्षकों को सेंटर के फाउंडर सदगुरु जाग्गी वासुदेव द्वारा प्रशिक्षित किया गया है। शिक्षक तमिल में चेन्नई, वेल्लोर, कुड्डलोर, तिरुचिरापल्ली, सलेम और पलायमकोट्टई में प्रतिभागियों को ऑनलाइन मॉड्यूल वितरित कर रहे हैं।

व्हाइट हाउस के बाहर फायरिंग : ट्रंप सुरक्षित, हमलावर गिरफ्तार

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति आवास) के बाहर सोमवार शाम फायरिंग होने से खलबली मच गई। जिस समय यह फायरिंग हुई उस वक्त राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप कोरोना महामारी को लेकर मीडिया को जानकारी दे रहे थे। बीच प्रेस कांफ्रेंस से सीक्रेट सर्विस के एजेंट उन्हें ओवल हाउस (राष्ट्रपति कार्यालय) ले गए। थोड़ी देर बाद ट्रंप ब्रीफिंग रूम में फिर से लौटे और व्हाइट हाउस के नजदीक फायरिंग होने की पुष्टि की।

उन्होंने रिपोर्टरों को भरोसा दिलाया कि सब कुछ नियंत्रण में है। जानकारी के अनुसार सीक्रेट सर्विस की तरफ से की गई कार्रवाई में फायरिंग करने वाले

शख्स को गोली लगी है। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, 'व्हाइट हाउस के बाहर गोलीबारी हुई थी, लेकिन अब स्थिति नियंत्रण में है। मैं सीक्रेट सर्विस के कर्मचारियों को उनके द्वारा की गई त्वरित और प्रभावी कार्रवाई के लिए धन्यवाद देना चाहूंगा। किसी शख्स को अस्पताल ले जाया गया है। मैं नहीं जानता कि उसकी हालत कैसी है, लेकिन लगता है कि उस शख्स को सीक्रेट सर्विस की तरफ से गोली मारी गई है।' वहीं बाद में सीक्रेट सर्विस ने ट्वीट किया, '17 स्ट्रीट और पेंसिलवेनिया एवेन्यू में व्हाइट हाउस के एक ब्लॉक में गोलीबारी की घटना के बाद हमलावर और सीक्रेट सर्विस के एक जवान को अस्पताल ले जाया गया है।' उधर, व्हाइट हाउस के बाहर खड़े एक व्यक्ति के मुताबिक उसने दो राउंड फायरिंग की आवाज सुनी।

राष्ट्रपति चुनाव के बाद जी-7 की मेजबानी करना चाहते हैं ट्रंप

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को कहा कि वह नवंबर में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के बाद सात प्रमुख औद्योगिक समूह (जी-7) की मेजबानी करना चाहते हैं। ट्रंप ने कहा, 'मेरी इच्छा है कि राष्ट्रपति चुनाव के जी-7 की बैठक को आयोजित किया जाए।' वह इस बैठक में रूस को भी आमंत्रित करना चाहते हैं। क्रीमिया पर कब्जे के चलते रूस को वर्ष 2014 में समूह से बाहर कर दिया गया था। तब इस समूह का नाम जी-8 हुआ करता था। ट्रंप ने रविवार को अपने स्टाफ से कहा था कि वह चुनाव बाद जी-7 की मेजबानी करना चाहते हैं। इससे सभी सदस्य देशों को महत्वपूर्ण बैठक के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए अधिक समय मिलेगा।

घाघरा में छोड़ा चार लाख क्यूसेक पानी, आजमगढ़ के सगड़ी क्षेत्र के ग्रामीणों में दहशत

आजमगढ़, जेएनएन। घाघरा के घटते जलस्तर से कटान को लेकर आशंकित ग्रामीणों के सामने फिर नई मुश्किल खड़ी हो गई है। नदी में फिर से चार लाख क्यूसके पानी छोड़ा गया है। ऐसे में नदी के फिर से उफनाने को लेकर ग्रामीण कई तरह की आशंकाओं से घिर गए हैं। सगड़ी तहसील क्षेत्र के उत्तर दिशा में बहने वाली घाघरा नदी विनाशकारी रूप दिखाने के पश्चात विगत तीन दिनों शांत पड़ती नजर आ रही थी। घाघरा नदी का जलस्तर कम होने के कारण कई गांव कटना की चपेट में आने लगे हैं। लल्ला का पुरवा, सेमरी मुरारी का पुरवा, त्रिलोकी का पुरवा, बका हवा साधु का पुरवा आदि स्थानों पर कटान जारी है। इससे बड़ी आबादी का रहन-सहन सीधा प्रभावित हो रहा है। मुराली के पुरवा में 18 रिहायशी मकान है, जो नदी में विलीन होने के मुहाने के करीब है। ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है। कई परिवार कटान के भय से सुरक्षित ठौर की तलाश में पलायन करने हैं। घाघरा नदी से प्रभावित गांव में दुश्वारियां बढने से ईंधन एवं खाने-पीने के सामानों की समस्या होने लगी है। पशुओं के लिए चारे की जबरदस्त संकट नजर आ रही है। सोमवार की शाम घाघरा का जलस्तर बदरहुआ गेज पर सोमवार की शाम चार बजे 71.73 मीटर था। 24 घंटे बाद 71.71 मीटर दर्ज किया गया। मसलन दो सेंटीमीटर की जलस्तर में कमी के बावजूद नदी खतरा बिंदु से तीन सेंटीमीटर ऊपर बह रही है। डिघिया गेज पर सोमवार की शाम चार बजे 70.45 मीटर जबकि मंगलवार की शाम चार बजे 70.49 मीटर दर्ज किया गया।

रूस ने बनाई कोविड-19 वैक्सीन, 20 देशों से एक अरब डोज का मिला ऑर्डर

मास्को, रायटर्स। रूस ने विदेशी बाजारों के लिए अपनी पहली अनुमोदित कोविड-19 वैक्सीन का नाम स्पुतनिक वी रूस ने पहले उपग्रह पर रखा पहली वैक्सीन का नाम रखा है। रूस के प्रत्यक्ष निवेश निधि के प्रमुख किरिल दिमित्रीव ने कहा कि इस वैक्सीन की एक अरब खुराक के लिए 20 देशों से ऑर्डर मिल चुके हैं। चार देशों में अपने सहयोगियों के साथ रूस हर साल इसकी 50 करोड़ खुराक बनाएगा। उन्होंने कहा कि लैटिन अमेरिकी, पश्चिम व दक्षिणी एशियाई देशों ने इस टीके को खरीदने में रुचि दिखाई है और कई कांट्रैक्ट भी किए जा चुके हैं।

इससे पहले रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि इस सुबह दुनिया में पहली बार नए कोरोना वायरस के खिलाफ वैक्सीन रजिस्टर्ड हुई है। उन्होंने उन सभी लोगों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इस वैक्सीन पर काम किया। पुतिन ने दावा किया कि वैक्सीन सारे जरूरी टेस्ट से गुजरी है। अब यह वैक्सीन बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए भेजी जाएगी।

किरिल दिमित्रिक ने वैक्सीन के निर्माण की तुलना सोवियत संघ के 1957 के स्पूतनिक 1 के दुनिया के पहले उपग्रह से की। इसे एक ऐतिहासिक स्पुतनिक क्षण के रूप में

स्वागत किया। उन्होंने कहा कि विदेशी बाजारों में 'स्पुतनिक वी' के नाम से वैक्सीन की मार्केटिंग की जाएगी।

पुतिन की बेटी को लगाया गया टीका

हालांकि, आम लोगों के लिए यह वैक्सीन अगले साल एक जनवरी से उपलब्ध होगी। पुतिन ने मंगलवार को एक सरकारी बैठक में कहा कि टीका परीक्षण में खरा उतरा है और कोरोना वायरस के खिलाफ मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में सफल रहा है। उन्होंने कहा कि दुनिया के लिए इस महत्वपूर्ण टीके का बड़े पैमाने पर जल्द ही उत्पादन शुरू किया जाएगा। रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि उनकी दो बेटियों में से एक को यह टीका दिया गया है। पहली खुराक के बाद उनकी बेटी को हल्का बुखार हुआ था। दूसरी खुराक के बाद भी हल्का बुखार हुआ और उसके बाद सबकुछ अच्छा हो गया और एंटीबॉडी बढ़ गई। बता दें कि वैक्सीन लगाने के बाद बुखार आने का मतलब है कि टीका काम कर रहा है। रूस के रक्षा मंत्रालय और गामलेया रिसर्च इंस्टीट्यूट ने मिलकर यह टीका विकसित किया है। इस वैक्सीन में दो इंजेक्शन हैं। एक तरल और एक घुलनशील पाउडर के रूप में। दवाओं के पंजीकरण करने वाले सरकारी विभाग की वेबसाइट पर बताया गया है कि आम लोगों के लिए यह वैक्सीन अगले साल एक जनवरी से उपलब्ध होगी। तब रूस बड़े पैमाने पर टीकाकरण शुरू करेगा।

बिहार, गुजरात, यूपी और बंगाल में टेस्टिंग बढ़ाने की जरूरत : पीएम

नई दिल्ली, जेएनएन। देश में कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सबसे ज्यादा प्रभावित आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, पंजाब, बिहार, गुजरात, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्रियों के साथ वर्चुअल बैठक की। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि जिन राज्यों में टेस्टिंग रेट कम है और जहां पॉजिटिविटी रेट ज्यादा है, वहां टेस्टिंग बढ़ाने की जरूरत है। खासतौर पर बिहार, गुजरात, यूपी, पश्चिम बंगाल और तेलंगाना में टेस्टिंग बढ़ाने पर खास बल देने की बात इस समीक्षा में निकली है। इस बैठक में उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ, तमिलनाडु के सीएम के पलानीस्वामी, पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी, पंजाब के सीएम अमरिंदर सिंह, तेलंगाना के सीएम के चंद्रशेखर राव, महाराष्ट्र के सीएम उद्धव ठाकरे, गुजरात के सीएम विजय रूपानी और बिहार के सीएम नीतीश कुमार शामिल हुए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी इस बैठक में भाग लिया। इस साल मार्च में पहली बार लॉकडाउन की घोषणा के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने कोरोना वायरस की स्थिति को लेकर मुख्यमंत्रियों के साथ कई बैठक की थी।

कोरोना पर हो रही वर्चुअल बैठक

मुख्यमंत्रियों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग करते प्रधानमंत्री मोदी

के दौरान पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे पास हर जिले में कोरोना वारियर्स क्लब है। हमारे आशा और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं ने बंगाल में 2.5 करोड़ परिवारों से मिले, जिसमें 2.5 लाख लोगों की पहचान रअफ्क/क्छछ से की गई है और उन्हें परामर्श और चिकित्सा सहायता दी गई। बैठक में पीएम ने कहा कि अगर हम शुरूआत के 72 घंटों में ही मामलों की पहचान कर लें, तो ये संक्रमण काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने वाले सभी लोगों का 72 घंटे के भीतर परीक्षण किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा अब तक का हमारा अनुभव है कि कोरोना के खिलाफ कंटेनमेंट, कांटेक्ट ट्रेसिंग और सर्विलांस, सबसे प्रभावी हथियार है। देश में तेजी से हो रही कोरोना जांच पर पीएम मोदी ने कहा कि कोरोना टेस्टिंग की संख्या बढ़कर हर दिन 7 लाख तक पहुंच चुकी है और लगातार बढ़ भी रही है। इससे संक्रमण को पहचानने और रोकने में जो मदद मिल रही है, आज हम देख रहे हैं। हमारे यहां औसत मृत्यु दर पहले भी दुनिया के मुकाबले काफी कम था, संतोष की बात है कि ये लगातार और कम हो रहा है।

उन्होंने कहा कि आज 80 प्रतिशत एक्टिव मामले इन दस राज्यों में हैं, इसलिए कोरोना के खिलाफ लड़ाई में इन सभी राज्यों की भूमिका बहुत बड़ी है।

भूकंप के झटकों से फिर हिली मणिपुर की धरती

इंफाल, एएनआइ। उत्तर पूर्वी भारत का मणिपुर की धरती एक एक बार फिर भूकंप के झटकों से हिल गई। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार शाम 7 बज कर 27 मिनट पर 4.0 की तीव्रता का भूकंप आया। इसका केंद्र मणिपुर के म्यांग क्षेत्र में बताया जा रहा है। भूंकप आते ही दहशत का माहौल बन गया और लोग जल्दबाजी में अपने घरों से बाहर निकल आए। हालांकि अभी जानमाल का कोई नुकसान नहीं है। इसके पहले भी मणिपुर में कई बार भूकंप आ चुका है। पिछले हफ्ते यानी चार अगस्त को मणिपुर में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी के अनुसार भूकंप के ये झटके सुबह 5.52 बजे महसूस किए गए थे। बता दें कि कोरोना संकट के बीच देश के अलग-अलग हिस्सों में कई बार भूंकप आ चुके हैं, जिसमें पिछले महीने गुजरात के कच्छ में भी भूकंप आया था। वहीं, देश की राजधानी दिल्ली भी कई बार भूकंप के झटकों से हिल चुकी है।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज बुधवार, 12 अगस्त, 2020

संक्षेप समाचार

अज्ञात युवती का शव नहर से बरामद

मऊआइमा। शारदा सहायक नहर के निकट एक युवती की सडी गली लाश पुलिस ने बरामद कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है । मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम दुबाही से निकलने वाली शारदा सहायक नहर हाईवे से एक किलो मीटर दूर नहर के निकट एक अज्ञात युवती जिसकी आयु लगभग 25 से 30 वर्ष को मऊआइमा पुलिस ने बरामद किया है ।पुलिस के अनुसार शव एक सप्ताह पुरानी प्रतीक हो रही है । लाश से दुर्गंध भी आ रही है। युवती काला सलवार तथा लाल जम्पर पहने हुए है। पुलिस के अनुसार शव कहीं से बह कर आयी होगी। फिलहाल जाहिरा चोट नहीं देखायी दे रहा है । अज्ञात युवती की कोई शिनाख्त न होने से पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है । पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही सच्चाई सामने आएगी।

शंकरगढ़ पुलिस ने तमंचा फैक्ट्री का किया भंडाफोड़

शंकरगढ़। अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे आपरेशन के क्रम में शंकरगढ़ पुलिस ने तमंचा फैक्ट्री का भंडाफोड किया है। मुखबिर की सूचना पर धरे गए शातिर की निशानदेही पर फैक्ट्री पर छापा मारा गया और मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार करने के साथ ही पांच तमंचा, कारतूस, बनाने का उपकरण भी बरामद किया गया है।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन और एसपी यमुनापार व सीओ बारा के पर्यवेक्षण में अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत शंकरगढ़ पुलिस ने दो शातिर अपराधियों अंसार पुत्र गुलजार तथा मो. इस्माइल पुत्र मो. इब्राहिम को गिरफ्तार किया। शंकरगढ़ थानाध्यक्ष राजेश उपाध्याय व टीम ने मुखबिर की सूचना पर कार्रवाई करते हुए एक अभियुक्त को 315 बोर का एक तमंचा व एक जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है और उसकी निशानदेही पर फुलवरिया गांव में अवैध शस्त्र फैक्ट्री में शस्त्र बनाते दूसरे अपराधी को गिरफ्तार किया गया। उसके कब्जे से चार तमंचा व एक जिंदा कारतूस तथा शस्त्र बनाने के उपकरण बरामद हुए। एसओ राजेश उपाध्याय ने बताया कि मो. इस्माइल और

बरामद तमंचे

अंसार के ऊपर पहले से भी कई मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस टीम में उपनिरीक्षक जगदीश कुमार चौकी प्रभारी नारीबारी, उपनिरीक्षक उमाशंकर, कांस्टेबल बृजमोहन मौर्या, मुकेश वर्मा, मनीष कश्यप, आलोक जीत सिंह, कीर्ति लता शामिल रहे।

पुलिस की गिरफ्त में तमंचा फैक्ट्री चलाने वाले

हाईकोर्ट समाचार

यूपी में ई-स्टैम्प की बिक्री पर कम कमीशन के खिलाफ याचिका पर फैसला सुरक्षित

प्रयागराज। ई-स्टैप की बिक्री में सामान्य स्टैम्प पेपर की तुलना में कम कमीशन दिए जाने के खिलाफ स्टैम्प वेंडरों की याचिका पर हाईकोर्ट ने अपना निर्णय सुरक्षित कर लिया है। स्टैम्प वेंडरों का कहना है कि सामान्य स्टैम्प की तुलना में ई स्टैम्प बेचने पर उनको कम कमीशन मिलेगा। जिससे उनकी आमदनी कम होगी। यह एक प्रकार से असमानता है और संविधानिक प्रावधानों के वितपरीत है। यूपी स्टाम्प वेंडर एसोसिएशन की याचिका पर न्यायमूर्ति एसपी केसरवानी और न्यायमूर्ति अजय भनोट की पीठ सुनवाई कर रही है। स्टैम्प वेंडरर्स की ओर से पक्ष रख रहे वरिष्ठ अधिवक्ता एनसी राजवंशी का कहना था कि सरकार का दायित्व है कि वह आर्थिक न्याय लोगों को उपलब्ध कराए और असमानता दूर करे। प्रदेश सरकार द्वारा ई स्टैम्प बेचने के लिए लागू नीति से स्टैम्प वेंडर्स को नुकसान होगा। उनको सामान्य स्टैम्प पेपर की तुलना में कम कमीशन प्राप्त होगा। इससे उनकी आमदनी में कमी आएगी। इससे संविधान के अनुचछेद 38 जो कि नीति निदेशक तत्व का एक हिस्सा है उसका उल्लंघन होगा। याचिका के विरोध में सरकार की तरफ से अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता संजय गोस्वामी का कहना था कि ई स्टैम्प रूल 2013 में स्टैम्प वेंडर्स को ई स्टैम्प बेचने के लिए अधिकृत नहीं किया गया है। इनको बाद में संशाधित नियम 2019 में अधिकृत किया गया है। वर्तमान में सरकार के पास 17 हजार करोड़ रुपये से अधिक के स्टैम्प का स्टॉक है, जिसे बेचने में दो साल से अधिक का समय लगेगा। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि ई-स्टाम्प बेचने से उनकी आमदनी में विपरीत प्रभाव पड़ेगा। सरकारी अधिवक्ता का कहना था कि याचीगण के पास सिर्फ अपने लाइसेंस की शर्तों को लागू करवाने का अधिकार है। उन्होंने ई स्टैम्प अधिकृत बिक्री केंद्र के लिए आवेदन नहीं किया है। इसलिए ई स्टैम्प रूल के तहत नहीं आते हैं। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलों को सुनने के बाद निर्णय सुरक्षित कर लिया है।

लॉ कॉलेज के मामले में बार काउन्सिल आफ इंडिया को निर्णय लेने का निर्देश

प्रयागराज। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से संबद्ध आचार्य श्रीराम शर्मा लॉ कॉलेज की मान्यता को लेकर दाखिल याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने बार कौंसिल ऑफ इंडिया को छह सप्ताह में निर्णय लेने के लिए कहा है। कॉलेज का कहना है कि विश्वविद्यालय उसके कॉलेज में लॉ कोर्स संचालित करने पर निर्णय नहीं ले रहा है। जबकि याची कॉलेज ने कई प्रत्यावेदन इस सम्बंध में भेजे हैं। याचिका पर न्यायमूर्ति अन्जनी कुमार मिश्र ने सुनवाई की। विश्वविद्यालय के अधिवक्ता का कहना था कि कॉलेज को एलएलबी कोर्स की मान्यता दे दी गई है। मगर बार कौंसिल ऑफ इंडिया द्वारा जारी कई निदेशों के कारण मामला आगे नहीं बढ़ पा रहा है। बार कौंसिल आफ इंडिया देश में लॉ कॉलेजों की संख्या में कमी लाना चाहता है। इस मामले में याची कॉलेज ने बार कौंसिल को प्रत्यावेदन दे रखा है। इस स्थिति में विश्वविद्यालय के लिए आगे बढ़ना मुमकिन नहीं है। कोर्ट ने बार कौंसिल के अधिवक्ता की सहमति से कौंसिल को याची का प्रत्यावेदन छह माह में निर्णीत करने का निर्देश दिया है।

बारिश के चलते कस्बे में हुआ जलभराव

लालगोपालगंज। रुक-रुक कर हो रही रिमझिम बरसात के बीच झमाझम बारिश से कस्बा में जलभराव की स्थिति पैदा हो गई। सड़क किनारे दुकानों में पानी घुस गया। बरसात का पानी रोकने के लिए व्यापारी तरह तरह का उपाय करते रहे।

बूंदाबांदी के दरमियान अचानक झमाझम बारिश शुरू हो गई। स्थानीय कस्बा के जेठवारा मार्ग स्थित कर्बला के सामने बनी सड़क किनारे दुकानों में बरसात का पानी घुस गया। वहीं सड़क से कुछ नीचे बनी दुकानों में बरसात के पानी के साथ कूड़ा कचरा जमा हो गया। बारिश थमते ही दुकान के बाहर जमा पानी निकालने के लिए

कस्बे में भरा बारिश का पानी

व्यापारियों को मशक्कत उठानी पड़ी। माना जा रहा है कि यदि घंटों बरसात होती तो लोगों को जलजमाव की फजीहत झेलने से कोई इनकार नहीं कर सकता। इस संबंध में अधिशासी अधिकारी प्रदीप मिश्रा से बात करने की कोशिश की गई लेकिन बात नहीं हो सकी।

क्षेत्र पंचायत की बैठक 13 को

शंकरगढ़। क्षेत्र पंचायत सदस्यों की बैठक 13 अगस्त को भगवान रामेश्वरम वाटिका सिंधी टोला गेस्ट हाउस में होगी। उक्त आशय की जानकारी खंड विकास अधिकारी देवेंद्र कुमार ओझा ने देते हुए बताया कि पहले यह बैठक विकासखंड मुख्यालय शंकरगढ़ परिसर में होनी थी, लेकिन कोविड-19 के दृष्टिगत अब यह क्षेत्र पंचायत की बैठक सिंधी टोला स्थित गेस्ट हाउस में सुबह 11 बजे से होगी।

आदिवासियों ने आदिवासी दिवस पर अन्याय अत्याचार के खिलाफ लड़ने का लिया शपथ

घूरपुर। विश्व आदिवासी दिवस के मौके पर आदिवासी एकता मंच के बैनर तले वृक्षा रोपण, मास्क - सेनेटाइजर, साबुन वितरण कर बिरवल गांव में मनाया गया। लाकडाउन के चलते विश्व आदिवासी दिवस 9 अगस्त के बजाय 10 अगस्त को कार्यक्रम के दौरान नारे लगाए उ० प्र० में कोल आदिवासियों को जनजाति का दर्जा दो,वन अधिकार कानून 2006 लागू करो,वन उत्पाद का अधिकार आदिवासियों को दो,सभी को कृषि व आवास के पट्टे दो,मनरेगा मजदूरी 500रू० दो - वर्षभर काम दो, संघर्षरत आदिवासियों पर दर्ज सभी केस वापिस लो आदि।वक्ताओं ने कहा कोरोना महामारी के नाम पर बड़े कारपोरेट को छूट व जनता पर टैक्स लगाकर लूट मचा रही है।कोरोना महामारी के दौरान आज पूरे इलाके में भयंकर बेरोजगारी फैली हुई है'अगर सरकार किसानों मजदूरों की हितैषी है तो कोरोना काल की वजह से सभी परिवार को 10000रू० प्रति माह सहयोग दे सभी कर्ज माफ करे। आदिवासियों के विकास के नाम पर बड़े कारपोरेट को आमंत्रित कर रही है वहां बसे आदिवासियों को विस्थापित कर जल - जंगल, जमीन को बड़े कारपोरेट को सौंपेंगे। आदिवासियों ने शपथ ली कि हर अन्नयाय अत्याचार के खिलाफ विरोध करेंगे, कारपोरेट को देश से बाहर खदेडेंगे। वक्ताओं में विकास कोल, पारस कोल, लक्ष्मण, झल्लर कोल, शिवा कोल, रामसागर कोल, डॉ विनय कोल,शिवम् कोल, चन्द्रशेखर कोल, बागी कोल, संचालन नरेंद्र कोल ने व अध्यक्षता पूजा कोल ने किया।

चोरी की ट्रक के साथ एक गिरफ्तार तीन शातिर फरार

मऊआइमा। मऊआइमा पुलिस ने एक चोरी ट्रक के साथ एक चोर को गिरफ्तार कर लिया है । तथा तीन शातिर फरार हैं। जिस में एक हत्यारोपी भी शामिल है । जिसकी तलाश एक वर्ष से पुलिस कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम बांकाजलालपुर में एक चोरी की ट्रक लाकर उसका नम्बर व चेचिस नम्बर बदलने की सूचना पर पहुंचे सब इंस्पेक्टर राजेन्द्र प्रसाद यादव हमराही पुलिसकर्मियों के साथ दबिश डालकर अभियुक्त के कब्जे से एक ट्रक नम्बर बदला हुआ बरामद किया। पुलिस ने मौके से जीतेन्द्र कुमार पटेल पुत्र दूधनाथ पटेल ग्राम बांका जलालपुर मऊआइमा को गिरफ्तार कर थाने लायी और पूछताछ के दौरान उसने बताया कि यह ट्रक चोरी की है । हमारे साथ अरशद पुत्र मोहम्मद शमी ग्राम रुदापुर थाना सोरांव तथा दिलबहार व मसीद पुत्रगण जुमई ग्राम कुल्हाड़ीपुर थाना मान्धाता प्रतापगढ़ भी ट्रक चोरी करतें हैं । पुलिस ने धारा 419, 420, 467, 468, 471 के तहत जीतेन्द्र पटेल, अरशद, दिलबहार, मसीद के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर गिरफ्तार जीतेंद्र पटेल को जेल भेज दिया तथा फरार अभियुक्तों की तलाश कर रही है । बता दें कि दिलबहार एक वर्ष पूर्व सुपारी लेकर मऊआइमा के ग्राम बांका जलालपुर स्थित इलाहाबाद बैंक के शाखा प्रबंधक अनिल दोहरे की हत्या कर दी थी तब से वह फरार चल रहा है । अब उसका नाम ट्रक चोरी में भी आया है। पुलिस के अनुसार दिलबहार एक शातिर अपराधी है।

विवाद में गंभीर युवक ने तीन दिन बाद तोड़ा दम

करछना। थाना क्षेत्र के टकटैया गांव में रास्ते पर जानवर बाँधने को लेकर दो पक्षों में बीते शुक्रवार शाम विवाद हो गया था जिसमें एक पक्ष द्वारा अपने परिजनों के साथ मिलकर दो सगे भाइयों पर हमला कर लोहे की राडए धारदार हथियार से सिर पर वार करने के बाद चाकूओ से गोंद कर एक भाई कीं हत्या कर दी थी और दूसरे भाई को मरणासन्न कर दिया। जिसको परिजनों ने जिला अस्पताल में भर्ती कराया था जिसका इलाज चल रहा था। मंगलवार को इलाज के दौरान ही दूसरे भाई संजय कुमार ने दम तोड़ दिया। टकटैया गांव के

मृतक संजय कुमार (फाइल फोटो)

भगवत गुप्ता अपने पशुओं को गांव के आम रास्ते पर बाँधने से आने जाने वाले पडोसियों को दिक्कत होती थी। जिसको लेकर पडोसी बाबादीन पटेल के लडके संजय कुमार और अनिल कुमार ने कई बार रास्ते पर जानवर बाँधने से मना कर चुके थे। जिसको लेकर बाबादीन गुप्ता ने अपने परिजनों के मिलकर उक्त दोनो भाईयों के ऊपर जानलेवा हमला कर दिया था जिसमें से एक भाई अनिल की मौके पर जबकि दूसरे भाई संजय की मंगलवार को इलाज का दौरान मौत हो गयी। परिजनों ने तहरीर में गांव के ही कुछ अन्य लोगो की भी हत्या में संलिप्तता का आरोप लगाया है जिसको लेकर परिजनों ने रविवार को चक्काजाम भी किया था लेकिन पुलिस ने बर्बरतापूर्वक शव को छीन कर दफना दिया और चक्काजाम कर रहे लोगो को पीटकर भगा दिया था। अब दूसरे लड़के की भी मौत होने से परिजन काफी आक्रोशित है। जिसको देखते हुए गांव में एतिहातन पुलिस बल तैनात किया गया है। घटना में अभी तक चार नामजदों में तीन लोगो भगवत गुप्ताए ओमप्रकाश व पुत्री शान्ति देवी को जेल भेजा जा चुका है जबकि भगवत गुप्ता की पत्नी अभी पुलिस की गिरफ्त से दूर है। इंस्पेक्टर करछना सुरेन्द्र वर्मा ने बताया कि शव को परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया जिसका अंतिम संस्कार परिजनों ने डीहा गंगा घाट पर कर दिया। गांव में माहौल शांतिपूर्ण है और बचे हुए एक हत्यारोपी की तलाश जारी है।

जसरा में कोरोना संक्रमितों के बढ़ने का सिलसिला जारी

जसरा। विकास खंड के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जसरा में कोरोना संक्रमितों का प्रतिदिन बढ़ने का सिलसिला जारी है। दोपहर से शुरू हुए जांच में मंगलवार को सात लोगों में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी की पुष्टि करते हुए डा० तरुण पाठक ने क्षेत्र के लोगों को मास्क लगाकर सामाजिक दूरी का पालन करने को कहा है।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जसरा में कुल 58 लोगों ने कोरोना की जांच कराया जिसमें सात लोग कोरोना पाजिटिव पाये गये। सात संक्रमितों में तीन जे०पी०सीमेंट फैक्ट्री सड़वा के कर्मचारी, खटंगिया से एक होमगार्ड,

बूंदावा के कृष्णपुरी कालोनी के रास्ते को किया गया सीज

कृषणपुरी कालोनी बुदांवा से एक महिला, बैजला से एक के साथ ही एक इरादतगंज का ब्यक्ति कोरोना पाजिटिव पाये गये हैं। जे०पी०सीमेंट फैक्ट्री सड़वा में अब कुल 48 संक्रमित हो गये हैं।

चाट के दूकानदारों को फजीहत

कृष्णपुरी कालोनी बुदांवा में चार फुल्की व पापड़ के दूकानदार हैं। दुकानदारों ने कहा कि मोहल्ले में जाने वाले मार्ग को प्रधान बुदांवा अजय साहू व हल्का लेखपाल ददुल मिश्र ने बांधकर प्रतिबंधित कर दिया है।

गांवों में शुरू हो गया कोरोना का धावा

जसरा के बुदांवा, खटंगिया, अमरेहा, बैजला व इरादतगंज में भी संक्रमितों के निकलने का सिलसिला शुरू हो गया है। ग्रामीणों में इसको लेकर अफरा तफरी मच गई है।

पीड़ित परिवार से मिले अपना दल के उपाध्यक्ष

करछना। टकटैया गांव में हुये विवाद में दो युवकों की मौत हो जाने से यह घटना क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुयी है। मंगलवार को अपना दल के उपाध्यक्ष रामलखन पटेल ने पार्टी अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल के निर्देश पर पोस्टमार्ट हाउस पहुंचकर परिजनों से मिले। उन्होने कहा कि पीड़ित परिवार को ढ़ाढस बंधाते हुए हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। साथ ही हत्या में संलिप्त लोगो के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही किये जाने के साथ परिजनों की सुरक्षा करने की मांग की। इस दौरान यमुनापार के अध्यक्ष बृजेश पटेल और कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

फूलन देवी नाम न होकर एक ब्रांड है : राघवेन्द्र ठकुरिया

करमा । फूलन देवी एक ऐसा नाम जिसे संपूर्ण भारत ही नही अपितु विश्व में भी चर्चित हैं जब बात महिला सम्मान एवम अपराधों को न सहने की बात आती हों तों निश्चय रूप से फूलन देवी का नाम लिए बगैर हम आगे नही बढ़ सकते हैं । फूलन देवी ऐसा चर्चित नाम जिन्होंने अपने बाल्यकाल से ही अनेकों कष्टों को झेलतें हुए कभी असत्य एवम बुराइयों के आगे स्वयं को समर्पित नही की इतना ही नही अपने सूझबूझ एवम पराक्रम से देश की सबसे बड़ी पंचायत में आम जनता के मतों से निर्वाचित होकर विराजमान हुई उक्त बातें

(फाइल फोटो)

आदिवासी समाज के हितों के लिए संघर्षरत व स0 अध्यापक प्रा0 वि0 पड़ोखरा राघवेन्द्र ठकुरिया नें सोमवार को दोपहर फूलन देबू जयंती पर विभिन्न युवाओं को वर्चुअल मीटिंग के संबोधन में कही । श्री ठकुरिया नें आगे यह भी बोले कि श्रीमती फूलन देवी पूरे देश में लाखों लोगों की आदर्श हैं इस वर्ष लाकडाउन के कारण फूलन देवी जयंती न मना पाने का दुःख भी हैं लेकिन कोविड -19 पर किसी भी प्रकार की लापरवाही उचित नही हैं।

मऊआइमा कस्बे में एक और पाजिटिव मिलने से मचा हड़कम्प

मऊआइमा। मऊआइमा कस्बा हार्टस्पार्ट इलाका बनता जा रहा है । मंगलवार को एक सफाई कर्मचारी को कोरोना पाजिटिव पाए जाने से सफाई कर्मचारियों में हडकंप मचा हुआ है । कस्बा सहित अब पूरे क्षेत्र में कोरोना पाजिटिवों की संख्या एक दर्जन हो गई है। मऊआइमा कस्बा के गंजियाबाजार में कोरोना ने कहर बरपाया है । मंगलवार को दोपहर में एक सफाई कर्मचारी की जांच के बाद कोरोना पाजिटिव पाए जाने से मऊआइमा थाना क्षेत्र में पाजिटिवों की संख्या एक दर्जन पहुंच गई है । बता दें कि सबसे पहले थाने के एक दरोगा फिर रामनगर गंसियारी के दो सगे भाई फिर रामफलाइनारी पुलिस चौकी का एक सिपाही एंव ग्राम लोकापुर की एक गर्भवती

कोरोना मरीज की जांच करने पहुंची स्वास्थ्य टीम व मौजूद पुलिस

महिला पाजिटिव पाए जाने के बाद मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला गंजियाबाजार निवासी अशोक खत्री 67 वर्ष, उनकी पत्नी पूनम सेठ 65 वर्ष, संजीव कुमार केसरवानी 46 वर्ष, हिमांशू खत्री 24 वर्ष, अब्दुल मलिक 27 वर्ष, समी उल्ला 50 वर्ष पाजिटिव पाए गए थे । मंगलवार को मऊआइमा कस्बा के मोहल्ला मौलाना निवासी पिंटू 35 पुत्र झंन्ना जो नगर पंचायत मऊआइमा में सफाई कर्मचारी है। स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर जांच के पश्चात कोरोना पाजिटिव पाए जाने से मोहल्ला मौलाना को बांस बल्लियों से सीज कर दिया गया है । और मोहल्ले को सैनेटाइजर भी किया जा रहा है । मंगलवार को एस डी एम अनिल चतुवेर्दी, स्थानीय थाने की पुलिस एंव स्वास्थ्य विभाग की टीम लेखपाल मौके पर पहुंच कर मोहल्ले के सभी निवासीयों और दुकानदारों को चेतावनी दी कि सभी लोग अपनी अपनी जांच स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर जा कर करा लें । अन्यथा उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाएगी। तथा दुकानदारों को विशेष रूप से चेताया गया कि बिना जांच के वह दुकान न खोलें ।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

आई0टी0आई0 में प्रवेश हेतु 23 अगस्त तक करें आनलाइन आवेदन

नैनी। प्रधानाचार्य, राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, नैनी प्रयागराज ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया है कि जनपद प्रयागराज में राजकीय आई0टी0आई0 नैनी, कटरा, माण्डा तथा महिला (कटरा) के साथ ही समस्त सम्बन्धन प्राप्त निजी आई0टी0आई0 में प्रवेश हेतु आनलाईन आवेदन ६६६.२५३४स्त्र.ह्ल पर दिनांक 23.08.2020 (रात्रि 12:00 बजे) तक किया जा सकता है। आवेदन शुल्क अनु0जा0/जा0 जाति के अभ्यर्थियों हेतु रू0 150.00 तथा शेष अन्य वर्ग हेतु रू0 250.00 आनलाईन जमा करते हुए आवेदन किया जा सकता है। आवेदन के समय शैक्षिक योग्यता, मूल निवास प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण, आधार कार्ड तथा फोटो एवं हस्ताक्षर स्कैन कर पोर्टल पर अपलोड करते हुए आवेदन किया जा सकता है।

पशु तस्करी गिरोह के 9 लोग गिरफ्तार, 16 पशु बरामद

प्रयागराज। झूंसी पुलिस ने पशुतस्करी के कारोबार में सक्रिय गिरोह का खुलासा करते हुए मंगलवार को नौ लोगों को गिरफ्तार किया। उनके कब्जे से एक ट्रक में लादे गए कुल सोलह पशुओं को मुक्त कराया। पुलिस ने सभी के विरूद्ध पशुक्रूरता अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज करके विधिक कार्रवाई की।

पकड़े गए आरोपितों में मध्य प्रदेश के रींवा जनपद में स्थित गंगेय गांव निवासी रामलखन, जौनपुर के मड़ियाहू थाना क्षेत्र के बारी गांव निवासी नन्दलाल यादव पुत्र लालता प्रसाद, सराय इनायत थाना क्षेत्र के तेन्दुई गांव निवासी सोनू, इदरीश और उसके भाई इंग्लिश पुत्र सिंधीखान एवं अनुराग पुत्र इंग्लिश, गोलू पुत्र जावेद,उक्त गांव निवासी अल्ताफ एवं सराय इनायत के लालगंज गांव निवासी मो. सद्दाम पुत्र मुस्तफा है। पुलिस टीम ने उक्त लोगों के कब्जे से एक ट्रक को कब्ज में लिया है। उसमें लादे गई दस गाय, दो बछड़ा, दो भैंस, दो पड़वा को मुक्त कराया। उक्त सभी लोगों को विधिक कार्रवाई करते हुए न्यायालय भेज दिया।

पुलिस की गिरफ्त में पशु तस्कर

अपर पुलिस अधीक्षक गंगापार नरेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीक्षित के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत मंगलवार दोहपर झूंसी क्षेत्र से पशुतस्करों को गिरफ्तार किया गया है। सभी के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जा रही है।

धारदार हथियार से गला रेतकर युवक की हत्या

प्रयागराज। कीडगंज थाना क्षेत्र में स्थित रामबाग सेवा समिति मैदान में सोमवार की रात एक युवक की गला रेतकर हत्या कर दी गई। मंगलवार की सुबह सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। पुलिस परिजनों की तहरीर पर मोहल्ले के ही एक युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर ली है और उसकी तलाश में दबिश दे रही है।

कीडगंज के पूरा बल्दी तम्बाकू वाली गली निवासी रवि निषाद (30वर्ष) पुत्र जगदीश निषाद सोमवार की रात घर से निकला और वापस नहीं लौटा। मंगलवार की सुबह रामबाग सेवा समिति मैदान में उसका शव लहूलुहान पाया गया। हत्या की जानकारी होते ही स्थानीय लोगों ने सूचना पुलिस को दी। सूचना पर कीडगंज थाना प्रभारी निरीक्षक मौके पर पहुंचे और हत्या की खबर आलाधिकारियों को दी। पुलिस उसकी पहचान के लिए प्रयास किया तो उसकी अतिसीघ्र पहचान होते ही परिवार के लोग मौके पर पहुंचे। पुलिस घटनास्थल से वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाने के लिए फोरेंसिक टीम को बुलाया और जांच शुरू कर दी है। हत्या की वजह पुरानी रंजिश बताया जा रहा है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने मृतक के परिजनों की तहरीर पर मोहल्ले के ही रहने वाले विकास के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है और उसकी तलाश में दबिस दे रही है।

अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि मंगलवार सुबह सूचना मिली कि एक युवक की हत्या कर दी गई है। सूचना पर शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी गई। परिजनों की तहरीर मुकदमा दर्ज करके विधिक कार्रवाई की जा रही है। हत्या की वजह पुरानी रंजिश लग रही है। फिर भी विभिन्न पहलुओं को लेकर जांच जारी है।

उमरे ने बाउंड्री वॉल के निर्माण के लिए रिलीज्ड कंक्रीट स्लीपरों का उपयोग किया प्रारम्भ

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे ने अनुपयोगी पीएससी स्लीपरों का उपयोग करते हुए ट्रैक के किनारे बाउंड्रीवाल का निर्माण कार्य प्रारम्भ किया है। उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय ने अनुपयोगी और प्रयोग उपरांत निकले हुए प्री-स्ट्रेस्ड कंक्रीट स्लीपरों के प्रयोग से रेलवे ट्रैक के किनारे-किनारे बाउंड्रीवाल निर्माण हेतु ड्राइंग जारी की है। इस ड्राइंग के के अनुसार कार्य करते हुए; आगरा मंडल ने आगरा- मथुरा खंड में 500 मीटर की बाउंड्रीवाल का निर्माण किया है और 1.5 किलोमीटर के एक और पैच पर काम कर रहा है। इसी क्रम में प्रयागराज मण्डल ने भी सूबेदारगंज स्टेशन पर लगभग 100 मीटर तक बाउंड्रीवाल का निर्माण किया है। 52 किलोग्राम ट्रैक संरचना से 60 किलोग्राम ट्रैक संरचना में उन्नयन कार्य और ट्रैक के नवीनीकरण के दौरान भारी मात्रा में अनुपयोगी पीएससी स्लीपर निकलते है। ये स्लीपर न केवल पटरियों के रखरखाव के के संबंध में अनुपयोगी हैं, बल्कि इनको रखने के लिए ट्रैक के किनारे के बहुमूल्य जगह की भी जरूरत होती है। इसके अतिरिक्त इसके धातुई हिस्से को रिसाइकल करना काफी खचीर्ला एवं पर्यावरण के लिए अनुकूल नही है। उत्तर मध्य रेलवे द्वारा तैयार की गई योजना के तहत, इन रिलीज किए गए स्लीपरों का उपयोग मजबूत बाउंड्रीवाल बनाने के लिए किया जा सकता है, जो इन अनुपयोगी पीएससी स्लीपरों को रखने एवं रीसाइक्लिंग से संबंधित अन्य समस्याओं को भी हल करता है। इस योजना के बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन से पहले आगरा और प्रयागराज मण्डल में निर्मित बाउंड्रिवाल की इन छोटी-छोटी पट्टियों की लागत, निर्माण के लिए आवश्यक समय सहित सभी मापदंडों पर मूल्यांकन किया जा रहा है। यह उत्तर मध्य रेलवे के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि नई दिल्ली-हावड़ा और नई दिल्ली- मुंबई के मध्य उत्तर मध्य रेलवे द्वारा सेवित किए जाने वाले दोनों मुख्य मार्गों को 160 किमी प्रति घंटे तक की गति पर परिचालन के लिए आवश्यक कार्य स्वीकृत हैं और बाउंड्रीवाल का निर्माण गति बढ़ाने के काम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बाउंड्री निर्माण में प्रयोग किये गये रिलीज्ड कंक्रीट स्लीपर

ट्रैक के किनारे खाली रेलवे भूमि पर सौर संयंत्र स्थापित करने वाली सोलर पार्क एजेंसी द्वारा पीपीपी योजना के तहत भी बाउंड्रीवॉल का निर्माण सोलर परियोजना में प्रस्तावित है जबकि शेष बाउंड्री वाल का निर्माण रेलवे द्वारा करना होगा।

मंगलवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संरक्षा, लोडिंग और 160 किलोमीटर प्रति घंटे की गति बढ़ाने के कार्यों की समीक्षा के दौरान महाप्रबंधक श्री राजीव चौधरी ने बल देकर कहा कि उत्तर मध्य रेलवे द्वारा निर्माण की जाने वाली बाउंड्रीवाल और पीपीपी के माध्यम से निर्माण के लिए प्रस्तावित बाउंड्रीवाल को स्पष्ट रूप से चिन्हित करने की आवश्यकता है। 160 किलोमीटर प्रति घंटे की गति बढ़ाने के काम की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रयागराज और आगरा मण्डलों को तकनीकी और अन्य सहायता प्रदान करने के लिए अपर महाप्रबंधक श्री रंजन यादव की अध्यक्षता में मुख्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों की समिति का तुरंत गठन किया जाये और 2023-24 तक पुरी की जाने के लिये लक्षित इस महत्वाकांक्षी परियोजना को पूर्ण करने के लिये इससे सम्बंधित महत्वपूर्ण कार्यों की दैनिक प्रगति की निगरानी की जाये।

समीक्षा बैठक के प्रारम्भ में उत्तर मध्य रेलवे में संरक्षा स्थिति की समीक्षा की गई। महाप्रबंधक श्री चौधरी ने कहा कि माल और यात्री ट्रेनों में परिचालन के दौरान आने वाली कमियों की पहचान करने में ट्रेन पासिंग स्टाफ के सभी प्रयासों को उपयुक्त स्तर पर सम्मानित की जानी चाहिए। ट्रेन परिचालन में संरक्षा में सुधार करने के लिए; उत्तर मध्य रेलवे ने विभिन्न संरक्षा अभियानों के अंतर्गत ट्रैक के बगल के विभिन्न इंस्टालेशनों की रनिंग ट्रैक से ऊंचाई तथा दूरी की जांच हेतु एक संरक्षा ड्राइव चलाई है जिससे वैगनों के खुले दरवाजों आदि से टकराने की किसी भी संभावना को समाप्त किया जा सके।

चार पहिया वाहन की टक्कर से मोटर साइकिल सवार की मौत

प्रयागराज। नवाबगंज थाना क्षेत्र के कंजिया हिन्छा का पूरा गांव के समीप हाइवे पर किसी चार पहिया वाहन की टक्कर से मोटर साइकिल सवार की मंगलवार सुबह मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक के पास से मिली आईडी के पते पर उसके परिजनों को खबर दी और विधिक कार्रवाई की। कन्नौज जनपद के ठठिया थाना क्षेत्र के रामनगर निवासी राजेन्द्र सिंह (38वर्ष) पुत्र लाखन सिंह दो पुत्र और एक पुत्र एवं पत्नी शारदा सिंह का भरणकृपोषण करने के लिए भदोंही में चार बेचने का काम करता था। बताया जा रहा है कि मंगलवार की भोर वह मोटर साइकिल से अपने गांव के लिए निकाला था। रास्ते में नवाबगंज के कजिया हिन्छा का पूरा गांव के समीप हाइवे पर उसकी मोटर साइकिल में किसी वाहन ने टक्कर मार दी। जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे उपचार के लिए कौड़िहार स्थित सरकारी अस्पताल ले गई। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मृतक के पास से मिली आईडी के पते पर परिजनों को खबर दी। हादसे की खबर मिलते ही उसके परिवार के लोग भी वहां पहुंचे। पुलिस ने परिजनों की तहरीर पर मुकदमा दर्ज करके विधिक कार्रवाई की।

जिला पंचायत की प्रस्तावित सड़क सात साल से नहीं बन पाई

प्रयागराज। जिला पंचायत प्रयागराज द्वारा 2012-13 में तहसील करछना के विकासखंड करछना स्थित ग्राम पंचायत नरैना के दलित बस्ती खटिकान में प्रस्तावित सड़क आज तक नहीं बन पाई। जिसकी जांच के लिए दर्जनों बार शिकायत के बावजूद भी अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा लीपापोती की जा रही है। मजे की बात यह है कि उस सड़क को निर्मित दिखाकर भुगतान भी आहरित कर लिया गया है।

जिला पंचायत कार्यालय प्रयागराज द्वारा 12 फरवरी 2019 शिकायतकर्ता के पास जनसूचना अधिकारी जिला पंचायत प्रयागराज के पत्र में कहा गया है कि वर्ष 2012 में चयनित क्रम संख्या 42 पर अंकित मार्ग का

निर्माण कराया जा चुका है। किंतु वास्तव में उपरोक्त सड़क अभी तक नहीं बन पाई है। उपरोक्त मार्ग के मरम्मत के लिए प्रस्ताव होने पर स्थलीय निरीक्षण के उपरांत आवश्यकता अनुसार कार्य कराए जाने का हवाला दिया गया है। जो सड़क बनाई ही नहीं गई, उसकी मरम्मत की बात करना पूरी तरह बेमानी है। अधिकारियों द्वारा केवल शिकायतकर्ता को गुमराह करने का कुप्रयास कई बार किया गया। लेकिन धन मंजूर होने के बाद जो सड़क नहीं बन पाई उसकी जांच के लिए कोई प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ाई गई।

उक्त सड़क केवल कागज पर बनाई गई और दर्जनों बार इसके जांच की मांग की गई। किंतु सम्बंधित अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा केवल हीलाहवाली की जा रही है। जिला पंचायत के पूर्व सदस्य मुकुंद लाल सोनकर जो उस समय जिला योजना समिति के सदस्य भी थे, उन्होंने इसकी जांच के लिए कई बार अधिकारियों के यहां गुहार लगाई। किंतु कोई कार्यवाही नहीं हो रही है। मुकुंद लाल का कहना है कि नरैना दलित कोरी बस्ती व खटिकान बस्ती में जिला पंचायत द्वारा 2012 में प्रस्तावित नई काली पेंटिंग सड़क बनाने हेतु धन मंजूर किया गया, किंतु वह सड़क अभी तक नहीं बनी। जबकि उस सड़क को निर्मित दिखाकर उसका धन भी आहरित कर लिया गया। तत्कालीन जिलाधिकारी ने भी जिला पंचायत राज विकास अधिकारी को जांच का निर्देश दिया था। किंतु वह जांच ठंडे बस्ते में है। अभी 4 मार्च 2020 को मुकुंद लाल सोनकर ने पुनः एक आवेदन मुख्य विकास अधिकारी को दिया है, जिसमें उपरोक्त सड़क ना बनाए जाने की जांच की मांग की गई है।

महिला ने तीन बच्चों को दिया जन्म, परिजनों में खुशी

नवजात शिशु

लालापुर। लालापुर क्षेत्र की एक महिला ने एक साथ तीन बच्चों को दिया जन्म जिससे परिजनो में खुशी का माहौल है। जानकारी के अनुसार अरैल चौराहा नैनी स्थित हयात अस्पताल में सोमवार को एक महिला ने 3 बच्चों को जन्म दिया। अस्पताल की महिला चिकित्सक डा०सादिया अशरफ के अनुसार सामान्य प्रसव द्वारा पैदा तीनों बच्चे स्वस्थ है।लालापुर के महेरा नागनपुर निवासी धनन्जय पांडेय की पत्नी दिव्या पांडेय (उम्र 24 वर्ष) को प्रसव पीड़ा होने पर परिजनों द्वारा सोमवार को भोर 4:00 बजे नैनी अरैल चौराहा स्थित हयात अस्पताल में भर्ती कराया गया, और सुबह 9:00 बजे उक्त महिला ने 3 बच्चों को जन्म दिया,जिसमें एक लड़की दो लड़का है। अस्पताल स्टाफ के अनुसार मां व तीनों बच्चे स्वस्थ हैं। परिजनों ने उक्त अस्पताल के चिकित्सको व स्टाफ के सहयोगात्मक व्यवहार के प्रति आभार व्यक्त किया।

अमरूद तोड़ने से मना करने पर पीटा

प्रयागराज। थरवई के बडपुर गांव में अमरूद तोडने से मना करने पर कुछ लोगों ने मारपीट कर चार लोगों को लहूलुहान कर दिया। उक्त गांव निवासी बृजभूषण मिश्र की अमरूद की बाग है। बाग को रामआसरे सोनकर ने खरीदा है। उसका 13 वर्षीय पुत्र हिमांशु बाग की रखवाली कर रहा था। इसी दौरान नरहरपुर गांव निवासी दीपू, अरविंद व आशीष बाग में पहुंचे और अमरूद तोडने लगे। हिमांशु ने मना किया तो उसे डंडे से पीटने लगे। तभी गांव के विजय भारतीया व ज्ञान सिंह बीचबचाव के लिए पहुंच गए। हमलावरों ने उन्हें भी पीटकर लहूलुहान कर दिया। सूचना पाकर रामआसरे भी पहुंच गया। उसके विरोध करने पर उसे भी मारपीट कर घायल कर दिया। पुलिस ने रामआसरे की तहरीर पर दीपू, अरविंद व आशीष समेत कुछ अज्ञात के खिलाफ मारपीट व बलवा का केस दर्ज किया।

एनडीआरएफ ने बाढ़ के संभावित इलाकों का किया भ्रमण

शंकरगढ़। यमुना नदी की गोद में बसे गांवों का एनडीआरएफ की टीम ने दौरा किया। संभावित बाढ़ को देखते हुए टीम उन सभी गांवों में पहुंची, जो बाढ़ की विभीषिका झेल चुके हैं। टीम के सदस्यों ने लोगों को बाढ़ से बचाव की सीख दी। सोशल डिस्टेंसिंग की सीख देते हुए टीम ने उन स्कूलों का भी दौरा किया, जहां पुनर्वास के इंतजाम किए जाने हैं।

जिलाधिकारी के निर्देश पर एनडीआरएफ की टीम ने सोमवार को बारा तहसील के देवरिया, भीटा, जसारा, कंजासा, मझियारी आदि तराई क्षेत्रों का निरीक्षण किया। बाढ़ संभावित इलाकों का दौरा कर रही टीम ने बाढ़ सुरक्षा इंतजामों का जायजा लेकर आवश्यक कार्यवाही का निर्देश दिया। बारा तहसील के देवरिया, भीटा, जसरा, कंजासा, मझियारी आदि क्षेत्र यमुना के बाढ़ से अत्याधिक प्रभावित रहते हैं। इस बार बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए प्रशासन ने कोरोना महामारी के मद्देनजर सामाजिक दूरी का पालन करते हुए पुनर्वास केंद्रों की व्यवस्था की है, जिसमें शिवालिक पब्लिक स्कूल बीकर भीटा, अनंतराम महाविद्यालय महेरा, जिला पंचायत इंटर कॉलेज मानपुर, प्राइमरी स्कूल इमलिया को पुनर्वास केंद्रों के रूप में स्थापित किया। तहसील के अधिकारियों के साथ टीम कमांडर जगदीश राणा निरीक्षक, सहायक उपनिरीक्षक मारकंडे यादव और उनकी टीम ने बारा तहसील के बाढ़ संभावित इलाकों का निरीक्षण करते हुए मौके पर तहसीलदार बारा डॉ विशाल कुमार शर्मा, लेखपाल, ग्राम प्रधान व प्रशिक्षण देने वाली टीम में रेस्क्यूर सौरव सरोज, चंद्रेश और नितिन आदि मौजूद रहे।

बाढ़ के संभावित इलाकों में भ्रमण कर जायजा लेते हुए

हिस्ट्रीशीटर ने दारोगा और सिपाही पर हमला किया, बदमाश भी जख्मी

प्रयागराज। शहर में दारागंज थाना क्षेत्र के एक हिस्ट्रीशीटर ने अपने दो साथियों के साथ दारोगा और सिपाही पर हमला कर दिया। इस दौरान बदमाश की आंख में भी चोट आई है। हिरासत में लेकर उसे मोतीलाल नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। वहीं उसकी मां ने पुलिस पर बेटे की पिटाई का आरोप लगाया है। दारागंज निवासी रंजीत सोनकर हिस्ट्रीशीटर है। सोमवार की रात एसआइ विश्वेंद्र कुमार यादव हमराही सिपाही के साथ काली सड़क पर गश्त कर रहे थे। तभी रंजीत सोनकर ने अपने साथियों के साथ उन पर हमला कर दिया। इस दौरान हुई मारपीट रंजीत की आंख में चोट लग गई। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। जबकि उसके दोनों साथी भाग निकले। वहीं रंजीत और उसकी मां ने दारोगा पर पिटाई का आरोप लगाया है। इंस्पेक्टर दारागंज धाकेश्वर सिंह ने बताया कि रंजीत सोनकर के खिलाफ दारागंज थाने में 13 मुकदमे दर्ज हैं। उसने सिपाही और दारोगा पर हमला किया और मारपीट में उसकी आंख में चोट लगी है।

अतरसुइया थाने में पीस कमेटी की बैठक सम्पन्न

प्रयागराज। थाना अतरसुइया में मोहर्रम त्यौहार , जन्माष्टमी, 15 अगस्त,को देखते हुए पीस कमेटी की बैठक थाना प्रभारी संदीप मिश्रा की अध्यक्षता में संपन्न हुई, बैठक में दरियाबाद, रानी मंडी, के मेहंदी कमेटी, झूला कमेटी, जन्माष्टमी, 15 अगस्त,के आयोजन करने वाले पदाधिकारियों ने भाग लिया, थाना प्रभारी संदीप मिश्रा जी ने आए हुए लोगों को बताया कि, इस वर्ष, करो ना महामारी को देखते हुए, त्यौहार को,मानया,जायगा लकिन किसी भी कार्यक्रम में केवल 5 आदमी ही शिरकत करेंगे, ऐसा शासन का आदेश के माध्यम से जिला अधिकारी , महोदय द्वारा लिखित रूप से आदेशित किया गया है, जिसकी जानकारी में आप लोग को दे रहा हूं, करो ना ऐसी महामारी से आप लोग खुद बच्चे और परिवार को भी बचाएं यही हमारी अपील है, बैठक में प्रमुख रूप से, अतरसुइया थाना क्षेत्र के समस्त चौकी इंचार्ज, के अलावा अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष रमेश केसरवानी, अरशद जैदी, वजीर खान, कासिम भाई, अहमद हसन कब्बन भाई, सिकंदर खान, फुजैल नेता, सैफ अहमद, मोहम्मद आसिफ, के अलावा दरियाबाद, रानी मंडी, क्षेत्र के गढ़वा नागरिक मौजूद थे

पीस कमेटी की बैठक में उपस्थित लोग

क्रियायोग सन्देश

प्रयागराज बुधवार, 12 अगस्त, 2020

हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की

क्रियायोग आश्रम में क्रियायोग विधि से मनाया गया श्री कृष्ण जन्माष्टमी

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान में कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व क्रियायोग ध्यान के आभामंडल में मनाया गया। कृष्ण जन्माष्टमी मनाने का प्रमुख लक्ष्य कंस भाव का कृष्ण भाव में रूपांतरण, क्रियायोग ध्यान की गहराई में उतरने पर कंस शब्द के अंदर छिपे ज्ञान का अनुभव होता है। कंस शब्द 'कं' व 'स' से मिलकर बना है। 'कं' का अभिप्राय कर्म की निरंतरता से है। ' स' का अभिप्राय (जीवन) से है। जब मनुष्य कर्म की निरंतरता को प्रथम वरीयता देता है और जीवन को द्वितीय तो वह शारीरिक बीमारियां मानसिक अशांति एवं अज्ञानता के विभिन्न स्वरूप में उलझ जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने शिक्षा दिया है कि कर्म करने का लक्ष्य जीवन की अनुभूति और जीवन के विस्तार से है। जब यह लक्ष्य मानकर कर्म किया जाता है, तो कर्म करने से मानव अस्तित्व योग अवस्था की ओर अग्रषित होता है। जीवन की अनुभूति के पूर्णता में पहुंचने पर मनुष्य द्वारा किया हुआ कर्म ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव द्वारा किए कर्म के समान हो जाता है। भगवान श्री कृष्ण ने कंस को मारा नहीं था बल्कि कंस को सर्वव्यापी विष्णु शक्ति से संयुक्त कर दिया था। क्रियायोग ध्यान से अपने अंदर कंस चैतन्य को कृष्ण चैतन्य में रूपांतरित करें।

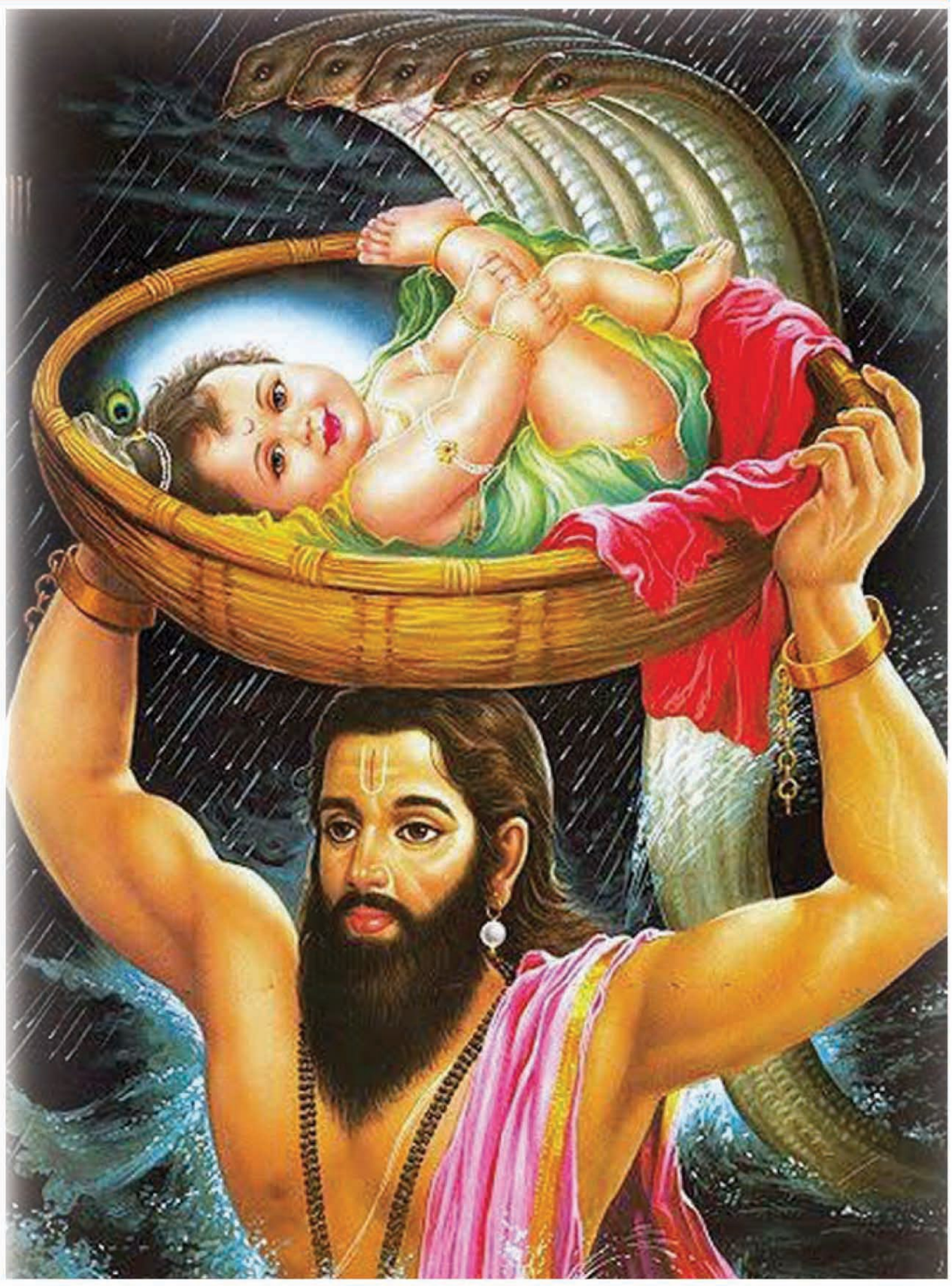

क्रियायोग का विस्तार भारतवर्ष का निर्माण

भारतवर्ष के राजनीतिक शैक्षिक और सामाजिक पर्यावरण को चिर आनंद के आभामंडल में ज्ञानयुक्त व शक्तियुक्त करने के लिए क्रियायोग का विस्तार सबसे महत्वपूर्ण और पावन कर्म है। जैसे-जैसे क्रियायोग का विस्तार होगा, वैसे- वैसे राजा, राजनीति, राजधर्म आदि के विषय में जनता को सम्यक ज्ञान होगा और राष्ट्र की सभी प्रकार की समस्याएं आसानी से दूर हो जाएगी। विश्व के सभी मानव के अंदर जागृत चेतना निरंतर क्रियायोग विज्ञान की ओर बढ़ रही है। भविष्य में मनुष्य की सभी प्रकार की समस्याओं का निराकरण आसानी से संभव होगा। लड़ाई झगड़े कम होते जाएंगे, गरीबी मिटती जाएगी। आपस में प्रेम भाव बढ़ता जाएगा, सभी प्रकार की आवश्यक सुविधाएं सभी को प्राप्त होगी।

Real Aim of Janamashtami : Be reborn with living with Krishna-Consciousness.

Living with Krishna-consciousness means to perform all activities with true idea, thought and concept for providing the best services to all creations of Cosmos. God has become all creations of Cosmos. While beholding this thought, perform all works and duties of life. This is also known as the practice of Kriyayoga meditation. Then, one will realize true peace, health and prosperity.